कहां का तेल जलाएं, कहां का बचाएं?

यदि हम चाहते हैं कि इस सदी में धरती का तापमान 2 डिग्री सेल्सियस से कम बढ़े तो कुछ कठोर निर्णय लेने होंगे। 2 डिग्री का यह लक्ष्य राष्ट्र संघ जलवायु परिवर्तन संधि की वार्ता में निर्धारित किया गया था। इस मामले में एक ताज़ा रिपोर्ट में कहा गया है 2 डिग्री से कम का लक्ष्य हासिल करने के लिए हमें वर्तमान में उपलब्ध कोयला भंडार के 80 प्रतिशत, गैस के 50 प्रतिशत और तेल के 30 प्रतिशत को अदहनीय घोषित करना होगा। मतलब है कि ये भंडार आसानी से उपलब्ध तो रहेंगे मगर हमें फैसला करना होगा कि इन्हें जलाकर ऊर्जा प्राप्त नहीं करेंगे।

नेचर के 8 जनवरी के अंक में प्रकाशित युनिवर्सिटी कॉलेज लंदन के इंस्टीट्यूट फॉर सस्टेनेबल रिसोर्सेस (आईएसआर) के क्रिस्टोफ मैग्लेड और साथियों की रिपोर्ट के मुताबिक कनाडा, रूस, सऊदी अरब और यूएस को अपने देश में स्थित अधिकांश कोयला, तेल व गैस भंडारों को जलाने से परहेज़ करना होगा। उनके मुताबिक चीन, यूएस और रूस के अधिकांश कोयला भंडारों को न जलाने का निर्णय भी ज़रूरी होगा।

राष्ट्र संघ की जलवायु परिवर्तन सम्बंधी सरकारों की समिति की गणना के मुताबिक यदि हम धरती के तापमान में वृद्धि को 2 डिग्री से कम रखना चाहें तो 900-1200 गिगाटन कार्बन डाईऑक्साइड ही वातावरण में छोड़ी जा सकती है। इस गणना को आधार बनाकर ही मैग्लेड और उनके साथियों ने कंप्यूटर मॉडल की मदद से उक्त रिपोर्ट तैयार की है।

मॉडल के मुताबिक यदि हम कोयला, तेल व गैस के वे सारे भंडार जलाएं जो फिलहाल उपलब्ध हैं या जिन्हें आसानी से लाभदायक ढंग से पाया जा सकता है, तो वातावरण में लगभग 3000 गिगाटन कार्बन डाईऑक्साइड पहुंचेगी। यह 2 डिग्री के लक्ष्य को हासिल करने की सीमा से 3 गुना ज़्यादा है।

वर्तमान में दुनिया में जिस तरह की नीतियों के आधार पर जीवाश्म ईंधन जलाया जा रहा है वह धरती का तापमान 5 डिग्री सेल्सियस बढ़ाने की दिशा में ले जा रहा है। वैसे इस स्थिति से निपटने के लिए आईएसआर ने जो सुझाव दिया है वह भी कम विवादास्पद नहीं है। आईएसआर का मत है कि जीवाश्म ईंधन दहन से बचने के लिए हमें और ज़्यादा परमाणु बिजली घरों की स्थापना करनी चाहिए और सौर ऊर्जा का विकेंद्रित उपयोग करना चाहिए। गौरतलब है कि परमाणु ऊर्जा की अपनी जानी-मानी समस्याएं हैं, जिनमें सबसे प्रमुख समस्या परमाणु कचरे को ठिकाने लगाने की है।

बहरहाल, दिक्कत यह है कि लोगों के जीवन की गुणवत्ता को बेहतर करने में जीवाश्म ईंधन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज भी बहुसंख्य आबादी 'ऊर्जा-अभाव' की स्थिति में जीवनयापन करती है। इन लोगों के लिए ज़रूरी है कि ऊर्जा की खपत बढ़े मगर उसके लिए ज़रूरी होगा कि कुछ लोग अपनी ऊर्जा खपत को सीमित करें। देखा जाए तो जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने की राह में यही सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है। ***(स्रोत फीचर्स)***

2014 के स्रोत सजिल्द का ऑर्डर करें

मूल्य 200 रुपए (25 रुपए डाक खर्च)